श्रेष्ठ समाज के लिए नैतिक, आध्यात्मिक एवं मानव मूल्य प्रेरित

शिक्षा दर्पण

शिक्षा प्रभाग की त्रैमासिक समाचार पत्रिका | अगस्त - 2014 | ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू (राज.)

1. विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के शिक्षकों के महासम्मेलन का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए डॉ. राधे श्याम शर्मा, कुलपति, सी.डी.एल. वि.वि. सिरसा, डॉ. एस. रत्नकुमारी, कुलपति, श्री पदमावती महिला वि.वि. तिरूपति, राजयोगिनी डॉ. निर्मला, संचालिका, ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत, राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय, उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग, राजयोगी डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल, ब्र.कु. शीलू बहन, डॉ. आर.पी. गुप्ता तथा अन्य।
2. गणपत वि.वि. मेहसाना, गुजरात के साथ मूल्य शिक्षा एवं आध्यात्मिकता पाठ्यक्रम के एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर करते हुए दादी हृदयमोहिनी जी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय, श्री अनिल भाई पटेल, अध्यक्ष, गणपत वि.वि., श्री अमित पटेल, रजिस्ट्रार, ब्र.कु. सरला दीदी, गुजरात ज़ोन संचालिका, राजयोगी डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल, ब्र.कु. पांड्यामणि तथा अन्य।

परामर्श दाता

राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर जी
महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़ एवं अध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग

राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय जी
कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज़ एवं उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग

राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू बहन जी
मुख्यालय संयोजिका, शिक्षा प्रभाग

प्रधान सम्पादक

राजयोगी डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल जी
राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षा प्रभाग

सम्पादक मण्डल

ब्र.कु. सुन्दरलाल जी, हरिनगर, दिल्ली
ब्र.कु. प्रो. एम.के. कोहली, गुड़गाँव
डॉ. ब्र.कु. ममता शर्मा, मेहसाना

प्रकाशक

एज्युकेशन विंग (R.E. & R.F.)
एवं ब्रह्माकुमारीज़

प्रकाशन

ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, शान्तिवन, आबू रोड

डिजाइनिंग और टाइप सेटिंग

ब्र.कु. चुनेश
वैल्यू एज्युकेशन ऑफिस, शान्तिवन, आबू रोड

अमृत सूची

- सम्पादकीय - विश्व भ्रातृत्व दिवस की पुण्य स्मृति
- University and College Educators' Conference - Education in Values and Spirituality
- महासम्मेलन उच्च माध्यमिक शिक्षकों का - मूल्य, आध्यात्मिक, स्वास्थ्य और पर्यावरण शिक्षा द्वारा समाज का पुनर्निर्माण
- 35वाँ अखिल भारतीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर
- 35वां अखिल भारतीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर की झलकियाँ
- विभिन्न स्थानों पर हुई शिक्षा प्रभाग की सेवाओं की झलकियां
- प्रकाश की दैदीप्यमणि दादी प्रकाशमणि
- दादी जी का जीवन चरित्र हम सबके लिए प्रेरणादायी
- तपस्विनी दादी प्रकाशमणि जी के नेतृत्व में संस्था का दिव्य सफर
- आंतरिक सशक्तिकरण की प्रक्रिया है मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा
- Value Education And Spirituality Admission Open, 2014-15

शिक्षा प्रभाग के सभी सदस्य अपना ई-मेल आईडी एवं मोबाइल नम्बर हमें इस ई-मेल से भेजिये:
bkchuneshabu@gmail.com, Mob.: 094140-03961

निवेदन

शिक्षा प्रभाग के सेवा समाचार फोटो सहित तथा स्व-रचित कविता, गीत, लेख इत्यादि वैल्यू एज्युकेशन सेंटर, आनंद भवन, तीसरी मंजिल, शान्तिवन, आबू रोड के पते पर भेजकर अपना सहयोग प्रदान करें।

E-mail: harishshukla31@gmail.com/bkchuneshabu@gmail.com
Mobile No.: +91 94276-38887 / +91 94140 -03961 / +91 94263-44040

डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल
राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षा प्रभाग, सुखशान्ति भवन (अहमदाबाद)

सम्पादकीय

विश्व भ्रातृत्व दिवस की पुण्य स्मृति

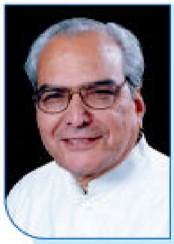

1 जून 1922 के दिन सिंध हैदराबाद के सुप्रसिद्ध ज्योतिषी गोपालदास और उनकी सहधर्मिणी हकी बहन के सांस्कृतिक परम्पराओं से ओत-प्रोत अध्यात्म परायण संस्कारी परिवार में एक पुत्री रत्न का जन्म हुआ। पिता गोपालदास जी को पुत्री के उज्ज्वल जीवन के संकेत मिलने लगे। उन्होंने अपने परिवार को आश्वस्त करते हुए कहा था, 'यह बालिका सामान्य नहीं है। यह असाधारण आध्यात्मिक व्यक्तित्व सम्पन्न, प्रेम और पवित्रता की देवी बन विश्व शान्ति का प्रकाश स्तम्भ बनेगी।' यही पुत्री रमा देवी भारत की देव भूमि पर मानव मात्र के उद्धारक भागीरथ कार्य के प्रणेता महामानव प्रजापिता ब्रह्मा के सम्पर्क में आई और उनके सम्पर्क से ज्योति स्वरूप शिव एवं आने वाली सतयुगी दुनिया का साक्षात्कार भी किया। यही रमा देवी अपने आध्यात्मिक ज्ञान व राजयोग द्वारा महान क्रान्ति की नायिका शीतला, दुर्गा, सरस्वती और संतोषी देवी स्वरूपा दादी प्रकाशमणि जी कहलाईं और एक आध्यात्मिक प्रकाश स्तम्भ बनी। ऐसी राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी के सम्पर्क में आना मेरे लिए लोहे का पारसमणि के सम्पर्क में आने के बराबर था। यह सौभाग्य सन् 1974 के फरवरी मास में साकार हुआ, तब से लेकर आज तक दादी जी के अंतरंग अनुभव के संस्मरण मुझ आत्मा में जीवंत है जिनमें से कुछ का यहाँ उल्लेख आवश्यक है। जब मैं पहली बार दादी प्रकाशमणि जी से मिला तो उनके व्यक्तित्व में पावनता और सादगी से भरा आन्तरिक सौंदर्य देख भाव-विभोर हो गया। उनकी दृष्टि में एक अजीब आत्मीयता थी, एक चमत्कारिक चुम्बकीय आकर्षण था। उनकी शक्ति और गुणों का प्रकाश मुझमें समा रहा था। मुझे लगा कि दादी सिर्फ मेरी ही है, सिर्फ मेरी दादी। सारे विश्व को भ्रातृत्व के विशुद्ध स्नेह से जोड़ने वाली दादी जी के अप्रतिम आत्मीयता पूर्ण व्यक्तित्व का सान्निध्य पाकर स्वयं को अति भाग्यशाली एवं गौरवान्वित अनुभव करने लगा।

प्रेम, शान्ति, ममता, सरलता और वात्सल्य की मूर्ति दादी जी से विगत 40 वर्षों में व्यक्त और अव्यक्त रूप से अनेक बार मिलना हुआ। विभिन्न सेवाओं में मार्गदर्शन हेतु एवं आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए, लौकिक पुत्रियों के समर्पण हेतु आदि अनेक प्रसंगों में दादी जी के साथ यात्राएं करने एवं सेवाओं में निकट रहने के प्रसंग उपस्थित हुए। इस दौरान मैंने देखा- सदैव एकरस अवस्था में हर्षित आभामण्डल के साथ बच्चों के साथ बच्चा, युवाओं के साथ युवा, कुमार-कुमारियों के साथ हमजिन्स, बूढ़ों के साथ प्रौढ़ता एवं परिपक्वता का आभास कराती हुई वह अपने अलौकिक व्यक्तित्व की छाप छोड़ती गई। युवाओं और बच्चों के बीच दादी जी कहती थी, ''आप जैसा चाहें, वैसा भविष्य बना सकते हैं। यदि आप यह समझ लो कि हर परिस्थिति के पीछे कोई न कोई सुअवसर है, तब वर्तमान के हर क्षण का आनन्द ले सकते हैं जिससे आपके अंदर का भय समाप्त हो जाएगा। प्रतिदिन आप अपने अंतर की तरफ झांके तो आपको अपनी आन्तरिक गुणों की सुंदरता का अनुभव होगा और आप दाता, निर्माता और नेता बन जाएंगे। ऐसी सभ्यता एवं व्यवस्था के लिए आध्यात्मिक शिक्षा की आवश्यकता है। इससे हमारी नैतिकता और चरित्र को बल मिलेगा।''

संस्था का आध्यात्मिक उत्कर्ष एवं दादी जी के व्यक्तित्व एवं विचारों से प्रभावित होकर मुझे शिक्षा प्रभाग की सेवाओं के लिए प्रेरणा मिली। प्रारम्भ में बच्चों का एक आध्यात्मिक संगठन खड़ा हुआ। उनके व्यक्तित्व विकास के लिए विभिन्न शिविरों, कार्यक्रमों एवं बौद्धिक, शारीरिक प्रतिस्पर्धाओं का आयोजन हुआ। संस्था से जुड़े हुए भाई-बहनों का भी एक आन्तरिक संगठन सहयोगी बन गया। शिक्षा जगत की सेवा के लिए प्रदर्शनी, पुस्तकों आदि का प्रकाशन हुआ। इन सबके पीछे दादी जी की प्रेरणा शक्ति कार्यरत थी। जब प्रभाग की सेवाओं की कार्ययोजना बनी, तब दादी जी ने मुझ आत्मा को शिक्षा प्रभाग में राष्ट्रीय संयोजक के रूप में सेवा का प्रभारी बनाया और उनकी अभिदृष्टि एवं मार्गदर्शना में सेवा फली-फूली। आज शिक्षा प्रभाग से जुड़े हुए भाई-बहनों ने इस दिशा में विभिन्न कार्ययोजनाओं द्वारा समस्त भारत की स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटी एवं अन्यान्य शिक्षा संस्थानों-संगठनों में शिक्षा में आध्यात्मिकता एवं मूल्यों का शंखनाद किया है। कल के बच्चे और युवा आज कई उत्तरदायित्वपूर्ण स्थानों पर सन्निष्ठ नागरिकों के रूप में कार्यरत हैं। कई राजयोगी बन इस आध्यात्मिक क्रान्ति के अग्रदूत बन सतयुगी देवी-देवताओं की दुनिया को धरती पर उतारने के लिए दादी जी की भुजाएं बन गए। इस प्रकार दादी जी की दिव्य आभा, दूरदर्शिता, पूर्ण व्यावहारिकता ने अनेकों का मन परिवर्तन किया और अपनी शालीनता, सादगी एवं दिशा परिवर्तन के लिए अद्भुत रूप से निमित्त बनी। दादी जी के व्यक्तित्व की रुहानियत और पावन प्रकम्पन्न आत्माओं को आज भी अपनी तरफ खींचते हैं। अलौकिक आकर्षण, ऊंची नम्रता, निमित्तता और सरलता को देखकर किसी को यह विचार भी नहीं आता था कि यह विश्व की इतनी बड़ी संस्था की मुख्य प्रशासिका है। आप लोगों से खुले दिल से मिलती थी। आत्मीय स्नेहपूर्ण व्यवहार, सबके साथ एक टेबल पर ब्रह्माभोजन लेना, ऐसा स्नेह और आत्मीयता पाकर आत्माएं धन्य हो उठती थीं। एक-दो बार तो मैं भोजन के समय ही दादी जी के पास सेवाकार्य से पहुँचा। मुझे देखते ही दादी जी बोली, 'हरीश आओ, तुम कभी भी अपनी दादी के पास बिना संकोच के आ सकते हो। तुम्हें आज्ञा लेने की कोई आवश्यकता नहीं है।' इस प्रकार प्रेम से पास बुलाकर, अपनी थाली से एक गिट्टी लेकर मेरे मुंह में रख देती। जब ऐसा प्रसंग याद आता है तब अपनी ही दादी माँ की भासना से आँखों में प्रेम और हर्ष के आँसू भर जाते हैं। दादी जी की उलाहना, आदेश, निर्देश, उपदेश आदि सभी में उनका प्यार और मिठास का मुझ आत्मा ने अनुभव किया है।

इस प्रकार दादी जी को मैंने बहुत नजदीक से निमित्तता, निर्मलता एवं निर्माणता की साक्षात् देवी के रूप में देखा। ऐसी विश्व की एक महान पावन आत्मा के साथ जीना और विश्व परिवर्तन के परमात्म कार्य का पाठ पढ़ना - मुझ आत्मा और मेरे परिवार के लिए अत्यन्त गौरवशाली एवं सौभाग्यपूर्ण रहा है। आज भी दादी जी के निर्मल व्यवहार और वाणी की अनुगूंज समग्र विश्व को एक साथ जीवन जीने की प्रेरणा दे रही है। आज भी 'प्रकाश स्तम्भ' जहाँ दादी जी के पार्थिव देह के अन्तिम दर्शन किए थे, वहाँ खड़े रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति में दादी जी ज्ञान का प्रकाश फैलाते हुए नजर आती हैं। आने वाले प्रत्येक व्यक्ति में भ्रातृत्व की भावना को जागृत कर विश्व की सभी आत्माओं को भ्रातृत्व का संदेश फैलानी वाली ऐसी महान आत्मा दादी प्रकाशमणि जी को कोटि कोटि प्रणाम।

डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल
राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षा प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज़

Education in Values and Spirituality

B.K. Prof. Ved Guliani
Hisar, Haryana

The Education Wing of the Brahma Kumaris University and College Educators' Conference on **'Education in Values and Spirituality'** started with its Reception Session on the evening of May 30, 2014 at their Gyan Sarovar Campus, Mount Abu (Rajasthan). In this conference, which raised some prominent spiritually intellectual issues concerning the modern human society, more than 700 educators including lecturers, professors, deans, directors, vice chancellors, presidents etc. of colleges and universities from across India and Nepal participated.

The main theme of the conference focused on the state of deteriorating moral and spiritual values and overpowering gross materialism at all levels of human existence in the present world. The prominent speakers included **Rajyogini Dadi Dr. Ratan Mohini Ji,** Joint Administrative Head of the Brahma Kumaris; **Dr. P.C. Patanjali,** Member of the Governing Council, A.B. Vajpayee Hindi Vishwa Vidyalaya, Bhopal; **Dr. Sanjay Biyani,** Director, Biyani Group of Colleges, Jaipur; **Prof. Baishnab Charan Tripathy,** Vice-Chancellor, Ravenshaw University, Cuttack; **Sri Suresh Deshmukh,** MLA Wardha; **B.K. Ravikala,** Senior Rajyoga Teacher and Executive Member, Education Wing and **Dr. Pandiamani,** Director, Distance Education, Brahma Kumaris.

While **Dadi Dr. Ratan Mohini** emphasized the need for change in the man's outlook towards life and spirituality, **B.K. Ravikala** explained the true meaning and significance of meditation practice. It is for man to exercise his choice of a better and elevated living than mere existence for material comforts, **Dr. Sanjay Biyani** said. All the speakers stressed that it is high time to pause and formally introduce spiritual values in present day education system. **Dr. Pandiamani** gave the details of Brahma Kumaris' effort of collaborating with 7 Universities and running Value Education courses like PG Diploma, M.Sc., and MBA etc. in these Universities.

New Vision and New Mission of Brahma Kumaris

The serious discussion on the issue of 'Education for Values and Spirituality' continued on the second day of the Education Conference organized by the Education Wing of the Brahma Kumaris at Gyan Sarovar, Mount Abu. Coordinating the discussion **B.K. Suman,** Senior Rajyoga Teacher lamented that spirituality seems to have been shunned out in the present world where material acquisition has become a priority. Though the Madhur Vani group welcomed the teachers in a melodious song 'Vidya mandir ke devon ka swagat....', yet it was painfully pointed out that teachers have become a part of present moral and ethical degradation.

Rajyogi B.K. Mruthyunjaya, Vice Chairperson of the Education Wing a magnetic and untiring organizer and an energetic and enthusiastic Karamyogi recalled the Former PM of India Shri P.V. Narsimha Rao saying, "The act of character building is being

accomplished by the Brahma Kumaris." and the Former President of India Shri. APJ Abdul Kalam, who said, "I found a new vision and a new mission in Brahma Kumaris." He also added, 'Education must purify the human mind, de-criminalize the society and 'divinize' man'.

Almost every speaker called upon the government and missionaries of all variant to rise and work for this dire need of human society. Let our universities and colleges stop producing skilled and trained barbarians. Today we are giving education and training in every field but not in spirituality. People wish to become wealthy and powerful but not moral and spiritual. True power comes from knowing one's true self and being able to establish a meaningful communion with the Divine. There were some of the thoughts expressed by most of the speakers who included **Dr. Radhe Shyam Sharma**, VC, CDL University, Sirsa; **Dr. S. Rathna Kumari**, VC, Sri Padmavati Mahila Visva-vidyalayam, Tirupati; **Rajyogini Dr. Nirmala**, Director, Gyan Sarovar, Mt. Abu; **Dr. B.K. Harish Shukla,** National Co-ordinator, Education Wing; **B.K. Shielu**, HQs. Coordinator, Education Wing, Mt. Abu; **Dr. R.P. Gupta,** HQs. Coordinator, Value Education Courses, Mount Abu etc.

Education for Developing Harmonious Relationship and Positive Thinking

In the afternoon session, which consisted of two open sessions and an insight session, emphasis was laid on the practical experience of meditation. **B.K. Shielu** not only explained the meaning and significance of meditation but conducted a very fruitful session of meditation practice. **B.K. Shivika, B.K. Pius, B.K. Roopa** and **B.K. Meenakshi** all executive members of the Education Wing highlighted the role of education in developing harmonious relationship, positive thinking and emotional maturity. In this exchange of spiritual discussion, **Prof. Chander Kala Paria,** VC, Maharaja Ganga Singh University, Bikaner and **Dr. R.L. Godara,** Vice Chancellor, HNG University, Patan called for a system of education that softly touches our conscience and changes our priorities by knowing and understanding the self.

The momentum, interest and enthusiasm of the speakers, participants and organizers at the Education Conference picked up further when on June 1, 2014 many different aspects of spiritual education were brought into the scope of discussion. Some of these topics were 'Spiritual in day-to-day life', 'Role of women in promoting values', 'Education for overcoming stress', 'Values & Spirituality for better governance' etc. The prominent speakers on these issues included **BK Prof. Ved Guliani**, **Dr. BK Nirupama**; **BK Surendran, Dr. B.K. Binny,** all executive members of the education wing and **Dr. A.M. Sheikh,** VC Anand Agriculture University, Anand; **Prof. Dipooba H. Devda,** Pro-VC Hemchandracharya North Gujarat University, Patan; **Dr. Vandana Vijayalaxmi,** Director, Adult Education, BR Ambedkar Bihar University, Muzaffarpur; **Prof. JPN Mishra,** Jain Vishwa Bharti Institute, Ladnun (Raj.); **Mr. Santosh Panda,** Chairman, NCTE, Delhi; **Dr. V.D. Abraham,** VC, Oriental University, Indore, etc.

Woman is the Reflector of Society's Character

Some of the contentions made by the speakers captured audience interest. 'Let us not make a fashion of being deprived of spirituality in our life'; 'Woman is the reflector of society's character'; 'Stress-free living is the natural nature of human soul'; 'I am a non-physical being enjoying stability of mind'; 'We need to devise some ways of paving the way between corruption and values', the speakers contended.

A surprisingly pleasing and blissful moment in the forenoon session came when **Rajyogini Dadi Janki Ji** blessed and addressed the audience through teleconferencing. She focused on the virtue of deep silence and advocated one's company with the Truth. She said that the virtuous smile on lips and innocence of one's eyes conveys a divine message to the onlooker. But

such virtues and values can be inculcated in life only through a deep and sincere love for God.

Blissful Attainments through Spiritual Education

The plenary session in the evening was not only full of academic activity but it also brought blissful attainments for one and all. Shiv Baba's mortal medium and a pure and divine soul **Rajyogini Dadi Hirdaya Mohini Ji,** Additional Chief of the Brahma Kumaris, Mount Abu, graced the occasion by her presence. This session was marked by the MoU signing ceremony with the Ganpat University, Mehsana, Gujarat; **Dr. Karsan Bhai Patel,** Chairman, Nirma University and Nirma Industries, Ahmedabad was honoured with **'Shiksha Vibhushan Award-2014'** in memory of Dadi Prakashmani Ji and the PG Diploma in Values and Healthcare in collaboration with Annamalai University was also launched. The speakers stressed the need for 'Education for improvement in quality of living', 'Educating for good human beings and not just professionals', 'Possibility of awarding a degree of divinity'. The speakers included B.K. Harish Shukla, Rajyogi B.K. Mruthyunjaya, Rajyogi B.K. Om Prakash, National Coordinator Media Wing; Rajyogini Sarla Didi, Gujarat Zone Incharge; B.K. Pandiamani, B.K. Mamta, Shri Anil Bhai Patel, President, Ganpat University, Mehsana, Dr. Karsan Bhai Patel, Dr. S. Vishwanathan, Founder Director, Center of Yoga Studies, Annamalai University, TN.

Rajyogini Dadi Hirdaya Mohini Ji in her blessings to the audience said that we must learn to make ourselves lotus flower in the pond of life. Let us close our doors to evil. She appreciated Rajyogi Mruthyunjaya's efforts of inspiring and mobilizing so many dignitaries from Universities and colleges across the country and Nepal. She persuaded the audience to inculcate the habit of always being happy.

Education for Environmental Awareness

The conference took up the issue of Education for environment awareness wherein **Dr. B.K. Jayadeva Sahoo,** Rajiv Gandhi University, Itanagar and **Prof. I.K Bhatt,** Director, Malviya National Institute of Technology, Jaipur highlighted the seriousness of dangers to environment and thereby the human existence. The session was coordinated by **BK Rajiv,** Education Wing, Mumbai, who emphasized the need for awareness at the highest level.

Blending Science with Values and Spirituality

The Conference concluded with the valedictory session chaired by **Rajyogi Karuna Ji,** Chief of Multi-Media, Brahma Kumaris, Mount Abu. The theme 'Blending Science with Values and Spirituality for a better Society' was discussed at length by **Dr. B.K. Seema,** Executive Member, Education Wing Ludhiana; **Dr. Vijay Singh Thakur,** Vice Chancellor, Dr.Y.S.Parmar University of Horticulture & Forestry, Solan; **Prof. K.P. Mishra,** Vice Chancellor, Behru Gram Bharti University, Allahabad and **Dr. Vinay Pathak,** Vice Chancellor, Vardhman Mahaveer Open University, Kota. **B.K. Anuradha,** Executive Member, Education Wing Mumbai conducted the meditation for the audience. **Prof. B.K. Ved Guliani** rewarded the report of the Conference and presented the Resolution, which was duly accepted and approved by the house. The session concluded with **Dr. K.S. Rathi,** Executive Member, Education Wing, Rohtak thanking the participants, speakers and organizers of the conference. **B.K. Jayshree,** of Ahmedabad who conducted the session concluded with the remarks that science is a very useful servant but it turns out to be a bad master.

RESOLUTION

We, the members of faculty and participants of the Education Conference from May 30 to June 03, 2014 at the Brahma Kumaris Gyan Sarovar, Mount Abu do hereby resolve to inculcate and promote amongst our learners and other members of the society, a value based education and spiritual elevation of all individuals, to ensure a lasting Peace, Happiness and Bliss in human society across the world.

ब्र.कु. निरूपमा बहन
जगन्नाथपुरी, उड़ीसा

परमात्म अवतरण भूमि आबू रोड स्थित शान्तिवन परिसर में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के शिक्षा प्रभाग द्वारा दिनांक 20 से 24 मई, 2014 तक **अखिल भारतीय उच्च माध्यमिक शिक्षकों का महासम्मेलन** आयोजन किया गया। इस सम्मेलन का विषय था, **'मूल्य, आध्यात्मिक, स्वास्थ्य और पर्यावरण शिक्षा द्वारा समाज का पुनर्निर्माण।'** कार्यक्रम का उद्‌घाटन एवं स्वागत समारोह 20 मई, 2014 को सायं 6.30 बजे संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका डॉ. दादी रतनमोहिनी जी के कर कमलों से दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। मधुर वाणी ग्रुप ने स्वागत गीत प्रस्तुत कर सभी शिक्षकों का स्वागत किया। इस सम्मेलन में भारत एवं नेपाल से 6 हजार से अधिक शिक्षकों ने भाग लिया।

मूल्य, आध्यात्मिक, स्वास्थ्य और पर्यावरण शिक्षा द्वारा समाज का पुनर्निर्माण

अखिल भारतीय उच्च माध्यमिक शिक्षकों का महासम्मेलन

डॉ. ब्र.कु. पांड्यामणि, निदेशक, मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा कोर्स ने सम्माननीय अतिथि, आदरणीय अध्यापक वर्ग सहित सभा में उपस्थित सभी भाई-बहनों का विधिवत् स्वागत किया। उन्होंने शिक्षा सम्मेलन में अध्यापक वर्ग के योगदान के महत्व की भी चर्चा की।

राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय जी, उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग ने अपने मुख्य वक्ता अभिभाषण में सभी मेहमानों तथा अध्यापकों का स्वागत करते हुए इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मुख्य चार स्तम्भों पर बल दिया। उन्होंने बताया कि मूल्य-शिक्षा, आध्यात्मिकता, स्वास्थ्य तथा पर्यावरण की जागरुकता और धारणा द्वारा ही समाज का पुनर्निर्माण करके मानव आत्मा को शान्ति और सुख प्रदान किया जा सकता है। आज के जीवन में बहुत तनाव है जिसने समस्त समाज को अशान्त कर दिया है। मानव चरित्र का पतन हो चुका है।

उन्होंने आगे कहा कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय वि.वि. मनुष्य मात्र का आत्म-उत्थान करने के लिए विशेष शिक्षा पाठ्यक्रमों पर बल दे रहा है। इसके अन्तर्गत पी. जी. डिप्लोमा, एम.एस.सी., एम.बी.ए. जैसे पाठ्यक्रम नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित किए जा रहे हैं। इन पाठ्यक्रमों द्वारा मनुष्यमात्र को नैतिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक उत्थान के मार्ग पर अग्रसर किया जा रहा है। आज की ज्वलंत चरित्रहीनता की समस्या का एकमात्र समाधान शिक्षा में मूल्यों का संचार है। केवल इसी से ही समाज का नवनिर्माण तथा श्रेष्ठ जीवन की उपलब्धि सम्भव है।

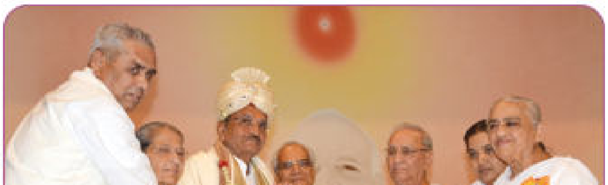

डॉ. करसन भाई पटेल, अध्यक्ष, निरमा विश्वविद्यालय, अहमदाबाद को शिक्षा विभूषण अवार्ड से सम्मानित करते हुए राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी, राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय, राजयोगी ब्र.कु. ओम प्रकाश, राजयोगी डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल तथा अन्य ।

राजयोगी डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल जी, राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षा प्रभाग ने कहा कि ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शिक्षा बाह्य जगत् की पारम्परिक शिक्षा से भिन्न है। मूल्यों पर आधारित विभिन्न पाठ्यक्रम तैयार किए गए हैं

जो समाज के नवनिर्माण में अहम भूमिका निभा सकते हैं। नि:सन्देह 1952 से भारतीय सरकार ने विभिन्न शिक्षा कमीशन बैठाए, जिन्होंने आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों का शिक्षा में समावेश आवश्यक समझा। लेकिन उनकी इन सिफारिशों को आज तक कार्य रूप नहीं दिया गया जिसका परिणाम हम सबके समक्ष है।

डॉ. दादी रतनमोहिनी जी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़ ने सभा को आशीर्वचन देते हुए सभी उपस्थित आत्माओं के भाग्य की सराहना की। ईश्वरीय विश्व विद्यालय इस बात का सूचक है कि यहाँ का शिक्षक कौन है और उसकी शिक्षा प्रणाली क्या है? हम सभी एक पिता की सन्तान हैं। मनुष्य से देवता बनने की उसकी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। परमपिता परमात्मा सर्व गुणों का भण्डारी है, सम्पूर्ण निर्विकारी है जिसको जगह-जगह मूर्ति रूप में पूजा जाता है। सभी श्रद्धा से उसे नमन करते हैं परन्तु उसके विषय में सम्पूर्ण ज्ञान नहीं है। हम आत्माओं को उस परम सत्ता से सम्बन्ध जोड़ना है ताकि हममें मूल शक्तियां और गुण जागृत हो सकें। इस विश्व विद्यालय में ऐसी शिक्षा दी जा रही है जो मन में सुख, शान्ति का संचार करके मनुष्य जीवन को देवता समान बनाती है।

इस सत्र के सम्माननीय अतिथि **श्री टी.डी. पटेल,** मुख्य संचालक, गुजरात स्कूल महामण्डल, गांधीनगर ने कहा कि राष्ट्र का निर्माण किसी करोड़पति के धन से नहीं हो सकता। यह गौरव केवल अध्यापक को प्राप्त है। उन्होंने इस बात पर हर्ष व्यक्त किया कि राष्ट्र निर्माण में उन्हें भी सहयोगी बनने का शुभ अवसर मिला है। ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साहित्य से उन्हें बहुत प्रेरणाएं मिलीं जिससे वे अनेकों के जीवन निर्माण में सहयोगी बन पाए हैं।

सम्मानीय अतिथि **श्री एस. एन. सुब्बा राव,** निदेशक, राष्ट्रीय युवा योजना, दिल्ली ने कहा कि वह इस सारे कार्यक्रम से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने एक गीत गाकर अपने भाव व्यक्त करते हुए सबका मन मोह लिया।

डॉ. आर.पी. गुप्ता, मुख्यालय संयोजक, मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा कोर्स ने इस सत्र के सभी मेहमानों, वक्ताओं तथा अध्यापकों का हृदय से आभार व्यक्त किया तथा **ब्र.कु. नेहा बहन** का मंच संचालन के लिए धन्यवाद किया।

मंगलवार, 21 मई 2014 को प्रात: 10 बजे खुला सत्र आयोजित किया गया। इस सत्र का विषय था, 'शिक्षा में मूल्य एवं आध्यात्मिकता।' इस सत्र में **डॉ. आर.पी. गुप्ता** ने सभा में उपस्थित मेहमानों तथा शिक्षकों का स्वागत किया।

डॉ. ब्र.कु. पांड्यामणि, निदेशक, मूल्य एवं आध्यात्मिक शिक्षा कोर्स ने ब्रह्माकुमारीज़ के संयोजन से संचालित विभिन्न विश्वविद्यालयों में मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा कोर्स की प्रस्तुति दी तथा प्रत्येक विश्वविद्यालयों में ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त तत्वाधान में संचालित पाठ्यक्रमों को विस्तार से समझाया। उन्होंने अध्यापकों को प्रेरणा दी कि उन्हें किसी न किसी विश्वविद्यालय से मूल्य शिक्षा तथा अध्यात्म के पाठ्यक्रम में डिग्री या डिप्लोमा अवश्य लेना चाहिए।

डॉ. ब्र.कु. सतीश गुप्ता, वरिष्ठ हृदय रोग विशेषज्ञ, ग्लोबल हॉस्पिटल, आबू पर्वत ने जीवन को मूल्यनिष्ठ बनाने पर बल दिया। उनके अनुसार शारीरिक स्वास्थ्य के साथ मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक स्वास्थ्य भी अति आवश्यक है। आजकल मधुमेह, ब्लड प्रेशर तथा अन्य हृदय रोग बहुत सामान्य हो गए हैं। हमें प्रतिदिन 45 मिनट सैर अवश्य करनी चाहिए जिससे बहुत सी बीमारियां अपने आप ठीक हो जाती हैं। उन्होंने बताया कि मनुष्य के विचार भी मनुष्य के स्वास्थ्य पर प्रभाव डालते हैं। आत्मिक स्थिति में स्थित होकर मनुष्य परमात्मा से दिव्य शक्तियां प्राप्त कर सकता हैं।

ब्र.कु. निरूपमा बहन, कार्यकारिणी सदस्या, शिक्षा प्रभाग, जगन्नाथपुरी ने विद्यार्थी जीवन के महत्व पर बल देते हुए कहा कि इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय का ज्ञान स्वयं परमपिता परमात्मा द्वारा प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से दिया जा रहा है। आत्मा, परमात्मा, विश्व ड्रामा को जानना ही अध्यात्म है। आध्यात्मिक ज्ञान के बिना जीवन में मूल्यों की धारणा नहीं हो सकती। इस ज्ञान द्वारा मनुष्यात्मा सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम, सम्पूर्ण अहिंसक बनकर देवता पद प्राप्त कर सकती है।

मंगलवार, 21 मई 2014 को सायं 4.30 बजे खुला सत्र आयोजित हुआ। इस सत्र का विषय था, 'श्रेष्ठतम समाज के लिए मूल्य आधारित शिक्षा।'

इस सत्र में **डॉ. ब्र.कु. ममता बहन,** कार्यकारिणी सदस्या, शिक्षा प्रभाग ने समाज में शिक्षा के क्षेत्र को सबसे ऊँचा और पवित्र क्षेत्र बताया। यदि कोई अध्यापक अपने दायित्व को न निभाएं तो उसका प्रभाव समस्त समाज पर पड़ता है। समाज में मूल्यों की स्थापना में धर्म पिताओं के साथ-साथ अध्यापकों का भी पूरा योगदान है। अगर महात्मा बुद्ध ने सत्य का, महावीर ने अहिंसा का, महात्मा गांधी ने शान्तिपूर्वक सत्याग्रह का प्रचार किया तो अध्यापकों ने इसका ज्ञान विद्यार्थियों को देकर इस आदर्श को क्रियात्मक बनाया। शिक्षक समाज का बौद्धिक पिता है। अत: उसे अपने महत्व तथा कर्तव्य को समझना है। अध्यापक ही विद्यार्थी के जीवन में मूल्यों और अध्यात्मिकता को स्थापित कर सकता है।

सत्र के अध्यक्ष **ब्र.कु. आत्मप्रकाश,** सम्पादक, ज्ञानामृत, शान्तिवन ने वर्तमान समाज में मूल्यों के महत्व पर बल देते हुए कहा कि ये जानते हुए भी कि हमारे समाज में बहुत बुराइयां हैं, वह निकृष्ट है फिर भी हम उसके परिवर्तन का प्रयास नहीं करते। बेशक मानव ने अपार भौतिक उन्नति की है परन्तु आज आध्यात्मिक क्रान्ति की आवश्यकता है जिसके बिना समाज का सुधार सम्भव नहीं है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय इस कमी को पूरा करने का प्रयास कर रहा है। इस महायज्ञ में अध्यापकों का सहयोग एक सकारात्मक योगदान होगा। इस सत्र में मंच का संचालन **ब्र.कु. सुप्रिया बहन** ने किया।

मंगलवार, 21 मई 2014 को सायं 5.30 बजे खुला सत्र आयोजित किया गया। इस सत्र का विषय था, 'विश्व एकता का स्रोत - जीवन मूल्य।'

इस सत्र में **ब्र.कु. सूर्य,** वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक, ज्ञान सरोवर ने कहा कि आज विश्व को सबसे अधिक आध्यात्मिक शक्ति की आवश्यकता है। आज के विश्व में स्वार्थ भाव अहम हो गया है जहाँ हर व्यक्ति लेना ही चाहता है, देना नहीं। जहाँ स्वार्थ और अहंकार है, वहाँ शान्ति नहीं हो सकती। इसी नकारात्मक शक्ति

के परिणामस्वरुप आज बच्चे, बूढ़े सभी तनाव तथा डिप्रेशन के शिकार हैं। मन को शान्त करने की कला तथा सकारात्मक शक्ति राजयोग से सीखी जा सकती है। राजयोग मनुष्यात्मा में दिव्य गुणों का संचार कर उसे चरित्रवान बनाता है। अत: अध्यापक ही विद्यार्थियों में श्रेष्ठ चरित्र की लहर फैला सकते हैं।

सत्र के अध्यक्ष **डॉ. प्रताप मिड्ढा,** निदेशक, ग्लोबल हॉस्पिटल, आबू पर्वत ने भारतीय संस्कृति की प्रशंसा करते हुए कहा कि प्रेम और संयम हमारे चरित्र की शक्तियां हैं। आज संसार की बुराइयां मन में संयम की कमी के कारण होती हैं। यदि मन सशक्त हो जाए तो समाज परिवर्तित हो जाएगा। **ब्र.कु. मुकेश अग्रवाल** ने मंच संचालन करते हुए कहा कि संसार के उत्थान का एकमात्र हल आध्यात्मिकता की समझ है।

बुधवार, 22 मई 2014 को सायं 4.30 बजे खुला सत्र आयोजित किया गया। इस सत्र का विषय था, 'मन को स्वच्छ और धरती को हरा-भरा बनाये अभियान।'

डॉ. आर.पी. गुप्ता ने दिन-प्रतिदिन कटते जंगलों पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा संचालित पर्यावरण अभियान के विषय में चर्चा करते हुए बताया कि वर्ष 2013 में भारत के कुल 111 स्थानों से यह अभियान चलाया गया। जंगलों के कटने से पर्यावरण को खतरा है जबकि हरियाणा के करनाल जिला में केवल 68 प्रतिशत जंगल रह गए हैं। इन 111 अभियानों का समापन आबू पर्वत में हुआ जहाँ करनाल जिला के असन्ध सेवाकेन्द्र ने 111 विद्यालयों में 20,601 वृक्ष लगाकर प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। इसके साथ पानीपत सेवाकेन्द्र, हरियाणा के जिन्द जिला ने भी सराहनीय कार्य किया। इन्हें भी पुरस्कार दिया गया। डॉ. आर.पी. गुप्ता ने इन अभियानों की फिल्म दिखाते हुए प्रेरणा दी कि धरती पर कम से कम 33 प्रतिशत वन होने चाहिए। इस सत्र का मंच संचालन **ब्र.कु. अनुराधा बहन,** मुम्बई ने किया।

बुधवार, 22 मई 2014 को सायं 5.30 बजे खुला सत्र आयोजित किया गया। इस सत्र का विषय था, 'स्वस्थ एवं खुश रहने की कला।'

डॉ. ब्र.कु. श्रीमंत साहू, प्रसिद्ध मधुमेह विशेषज्ञ, ग्लोबल हॉस्पिटल, आबू पर्वत ने कहा कि डॉक्टर को नेक्स्ट टू गॉड कहा जाता है परन्तु यह महिमा चिकित्सक की नहीं शिक्षक की है क्योंकि चिकित्सक को भी बनाने वाला शिक्षक है।

इस सत्र के अध्यक्ष **डॉ. साधू सिंग रंधावा,** निर्देशक, सर्व शिक्षा अभियान, पंजाब ने ब्रह्माकुमारीज़ के परिसर को प्रकृति तथा रुहानियत का अनमोल संगम बताया। उन्होंने कहा कि यहाँ की सच्चाई और पवित्र वायुमण्डल ने मुझे बहुत प्रभावित किया जिससे मुझे यहाँ बारम्बार आने की प्रेरणा मिली है।

बुधवार, 22 मई 2014 को सायं 6.30 बजे खुला सत्र आयोजित किया गया। इस सत्र का विषय था, 'सकारात्मक चिन्तन - खुशी की कुंजी।'

सत्र की मुख्य वक्ता **ब्र.कु. सुमन बहन,** वरिष्ठ कार्यकारिणी सदस्या, शिक्षा प्रभाग ने कहा कि संसार का प्रत्येक मनुष्य अज्ञानतावश भौतिक साधनों को ही खुशी का माध्यम समझता है। आध्यात्मिक उन्नति के बिना भौतिक प्रगति मानवता के पतन का कारण है। आध्यात्मिक उन्नति का आधार सकारात्मक चिन्तन है। हमें अपने अन्दर उत्पन्न होने वाले सकारात्मक, नकारात्मक, व्यर्थ तथा साधारण चिन्तन के प्रति पूर्णत: जागरुक होना चाहिए।

ब्र.कु. ऊषा बहन ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि हमारी खुशी सकारात्मक विचारों में निहित है। नकारात्मक सोच के कारण आज मनुष्य जीवन से खुशी कोसों दूर हो गई है। क्यूँ, क्या, कैसे के प्रश्नों ने मनुष्य की बुद्धि पर ताला लगा दिया है। हमें कौवे की चाल के स्थान पर हंस की चाल चलनी है। इस सत्र का संचालन **ब्र.कु. नीता बहन,** पाटन ने किया।

गुरूवार, 23 मई 2014 को प्रात: 10 बजे शिक्षा क्षेत्र में अद्वितीय योगदान देने वाले शिक्षाविदों का ब्रह्माकुमारीज़ शिक्षा प्रभाग द्वारा सम्मान एवं समापन समारोह का विशेष आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का विषय था, 'आधुनिक युग में ईश्वरीय शिक्षा का महत्व'।

समारोह में **राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय जी,** उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग ने मेहमानों का स्वागत करते हुए कहा कि इस समय समाज में व्यापक अपराधिकरण की प्रवृत्ति को ईश्वरीय शिक्षा द्वारा ही समाप्त किया जा सकता है। समस्त मानवता के दूषित मन को स्वच्छ करने का एकमात्र उपाय आध्यात्मिक ज्ञान है। नए विश्व की स्थापना के लिए यह ज्ञान अति आवश्यक है जिसके द्वारा ही एक प्रभु, एक विश्व परिवार की शिक्षा दी जा सकती है।

मुख्य वक्ता **ब्र.कु. डेनिस बहन** ने कहा कि सहज तथा सुखद जीवन के लिए मूल्यों एवं ईश्वरीय शिक्षा ही प्रथम आवश्यकता है। नैतिकता का गिरता स्तर चिन्ता का विषय है क्योंकि चरित्र का अभाव अशान्ति का कारण है। शिक्षा ही एकमात्र ऐसा माध्यम है जो बच्चों में जागृति पैदा करके समाज को बचा सकता है। अन्यथा हमारी आने वाली पीढ़ियां हमें इस दु:खमयी विरासत के लिए सदा श्रापित करेंगी।

इस सत्र में डॉ. दादी प्रकाशमणि, भूतपूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़ की स्मृति में स्थापित शिक्षा विभूषण से अनिल भाई पटेल, अध्यक्ष, गणपत वि.वि., गुजरात; डॉ. केवी. कुप्पूस्वामी, अध्यक्ष, आर.पी.एस. ग्रूप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स, कोयम्बटूर एवं डॉ. ई.टी. पुट्टया, कुलपति, गुलबर्गा वि.वि. को ब्र.कु. सरला दीदी, गुजरात ज़ोन संचालिका द्वारा सम्मानित किया गया।

राजयोगिनी दादी जानकी जी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़ ने सभी अध्यापकों तथा मेहमानों को शुभकामनाएं दीं। प्रभु परिसर में आने का सौभाग्य सभी को खुशी देता है परंतु अगर हम पवित्रता, सत्यता, धैर्यता, नम्रता तथा मधुरता के पांच गुण अपने जीवन में समा लें तो खुशी हमसे कभी अलग हो नहीं सकती।

ब्र.कु. सरला दीदी ने कहा कि मानव उन्नति का आधार आध्यात्मिक ज्ञान है जो मनुष्य को केवल परमात्मा से मिलता ही नहीं बल्कि परमात्मा समान बनाकर सुख-शांति भी देता है।

शिक्षा के इस समस्त आयोजन में आए सभी मेहमानों, अध्यापकों, सेवाधारियों तथा वक्ताओं का **ब्र.कु. कालीदास,** कार्यकारी सदस्य, शिक्षा प्रभाग ने धन्यवाद किया। कार्यक्रम का मंच संचालन **ब्र.कु. कोकिला बहन,** दिल्ली ने किया। आयोजन का समापन परमपिता परमात्मा शिवबाबा की याद से किया गया।

डॉ. ब्र.कु. ममता
कार्यकारिणी सदस्या
शिक्षा प्रभाग

परमपिता परमात्मा की अवतरण भूमि शान्तिवन परिसर में शिक्षा प्रभाग द्वारा प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी **35वाँ अखिल भारतीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर** 20 से 26 मई, 2014 तक आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में भारत के करीब 3,500 से भी अधिक संख्या में 10 से 15 वर्ष की आयु के बच्चों ने भाग लिया।

35वां अखिल भारतीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर

दिनांक 20 मई, 2014 को आगमन एवं रजिस्ट्रेशन किया गया। बच्चों को शिविर के लिए टाईम-टेबल, प्रतिदिन का चार्ट, आवश्यक निर्देश, बैज इत्यादि दिए गए। सायं 6 बजे बाल व्यक्तित्व विकास शिविर का उद्घाटन एवं स्वागत कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में शिक्षा प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक **डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल जी** ने स्वागत प्रवचन किया। स्व सेवा और विश्व सेवा इसी उम्र से शुरू करनी है। इस शिविर से आपको जीवन परिवर्तन का मार्गदर्शन मिलेगा।

शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष **ब्र.कु. मृत्युंजय जी** ने बच्चों को शिविर का लक्ष्य एवं उद्देश्य बताते हुए कहा कि आत्मा, आत्मा के गुण, मूल्यों एवं सद्गुणों का विकास ही व्यक्तित्व का विकास है। अपने मन को परमात्मा की याद में मग्न करना है। आपका मुस्कुराता चेहरा दूसरों को खुशी देगा।

सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशक **ब्र.कु. करुणा जी** ने बच्चों को शुभ प्रेरणाएं देते हुए कहा कि हमारी तीन माताएं हैं- लौकिक, अलौकिक और वंदे मातरम्। भारत को ही माता कहा जाता है। अच्छे बच्चे वह है जो कभी रोते नहीं है, समय पर हर कार्य करते हैं। चरित्र निर्माण की शिक्षा यहीं पर मिलती है।

ब्र.कु. भूपाल जी ने बच्चों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आज दुनिया में परिवर्तन की आवश्यकता है। बड़ों का परिवर्तन मुश्किल है। बच्चे सहज ही परिवर्तन स्वीकार कर लेते हैं। आप बच्चे ही दैवी गुणों की धारणा कर भारत को स्वर्ग बनाएंगे।

ब्र.कु. मुन्नी बहन जी ने आशीर्वचन देते हुए कहा कि आपको देखकर हमें बचपन के दिन याद आते हैं। दादी जी के अंग-संग रहकर मैं सब कुछ सीखी। आज्ञाकारी, फरमानबरदार, सच्चाई-सफाई, ईमानदारी आदि सब सीखा। आप भी ऐसे ही बनना। तत्पश्चात् दीप प्रज्ज्वलन करके शिविर का उद्घाटन किया गया। दीप प्रज्ज्वलन में विशेष अतिथि के रूप में **डॉ. साधु सिंग रंधावा**, निदेशक, सर्व शिक्षा अभियान, पंजाब उपस्थित थे। आपने भी बच्चों को शिविर के लिए शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आप भाग्यशाली हो क्योंकि आप इस नन्हीं सी उम्र में यहाँ आकर लौकिक और पारलौकिक पढ़ाई का महत्व समझते हो। आप दूसरों से अलग है और दूसरों से अधिक खुश है। सभी बच्चों को सौगात और टोली दी गई। मंच संचालन **ब्र.कु. अनु बहन** ने किया।

दिनांक 21 मई, 2014 को प्रात: 9.30 से 12.30 बजे तक डायमण्ड और एन्जिल ग्रुप के सभी बच्चों की बौद्धिक स्पर्धाएं हुईं। सायं 5 से 6 बजे तक 'खुशनुमा जीवन' विषय पर **ब्र.कु. सुशीला बहन** ने बच्चों को क्लास कराया। उन्होंने बच्चों को कहा कि बाबा की सबसे पहली विशेषता यही है कि वह हमेशा खुश रहने के लिए बच्चों को प्रेरणा देते थे। आप बच्चों को भी सदा खुश रहना है और अपने खुशनुमा जीवन से औरों को भी खुश रखना है। सायं 6.30 से 7.30 बजे तक सभी बच्चों को सामूहिक योगाभ्यास का कॉमेण्ट्री के साथ क्लास कराया गया। रात्रि 8 से 9.30 बजे तक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मंच संचालन **ब्र.कु. जयश्री बहन**, अहमदाबाद ने किया।

दिनांक 22 मई, 2014 को प्रात: 8 से 10 बजे तक डायमण्ड एवं एन्जिल ग्रुप की योगासन स्पर्धा हुई। 10 से 12.30 बजे तक डायमण्ड एवं एन्जिल ग्रुप की मूल्यनिष्ठ चित्र स्पर्धा, मूल्यनिष्ठ कहानी कथन और गीत-स्पर्धा का आयोजन किया

गया। सायं 5 से 6.30 बजे तक **ब्र.कु. कोकिला बहन** ने 'सफलता का आधार - ईश्वरीय ज्ञान' विषय पर एन्जिल ग्रुप का क्लास कराया। डायमण्ड ग्रुप का क्लास **ब्र.कु. शीलू बहन** ने 'शिक्षा में आध्यात्मिकता का महत्व' विषय पर कराया। सायं 6.30 से 7 बजे तक सामूहिक कॉमेण्ट्री के साथ बच्चों को राजयोग का अभ्यास कराया गया। रात्रि 8 से 9.30 बजे तक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मंच संचालन **ब्र.कु. तारा बहन**, गांधी नगर ने किया।

23 मई, 2014 को प्रात: 6 से 11.30 बजे तक तपोवन में खेलकूद स्पर्धाओं का आयोजन किया गया। खेलकूद स्पर्धा का प्रारम्भ बाबा का झण्डा लहराकर किया गया जिसमें विशेष रूप से गणपत यूनिवर्सिटी, मेहसाना के अध्यक्ष श्री अनिल भाई पटेल, ब्र.कु. मृत्युंजय जी, डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल जी, ब्र.कु. भरत एवं शिक्षा प्रभाग के सभी सदस्य उपस्थित थे। सायं 5.30 से 6 बजे तक एन्जिल ग्रुप का क्लास **ब्र.कु. अनु बहन**, राजुला ने 'समय का सदुपयोग' विषय पर कराया एवं डायमण्ड ग्रुप का क्लास 'मूल्यों से मानव बने महान' विषय पर **ब्र.कु. शिविका बहन** ने कराया। सायं 6.30 से 7.30 बजे तक सामूहिक कॉमेण्ट्री के साथ बच्चों को क्लास कराया गया। रात्रि 8 से 9.30 बजे तक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ। मंच संचालन **ब्र.कु. वंदना बहन**, शान्तिवन ने किया।

दिनांक 24 मई, 2014 को प्रात: 9.30 से 11 बजे तक एन्जिल ग्रुप का क्लास 'अच्छे संग का रंग' विषय पर **ब्र.कु. मेहरचंद** ने कराया। डायमण्ड ग्रुप का क्लास 'भोजन और स्वास्थ्य' विषय पर **ब्र.कु विद्या बहन** ने कराया। प्रात: 11.15 से 12.30 बजे तक डायमण्ड एवं एन्जिल ग्रुप का क्लास **ब्र.कु. गीता बहन** ने 'आदर्श जीवन के स्रोत हमारी दादियां' विषय पर कराया। सायं 5 से 8 बजे तक प्रकाशमणि पार्क में बच्चों के लिए पिकनिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम का मंच संचालन **डॉ. ममता बहन** ने किया।

दिनांक 25 मई, 2014 को प्रात: 9.30 से 11.15 बजे तक **ब्र.कु. सुप्रिया बहन** ने 'अच्छाई के लिए सात अरब कर्म' विषय पर डायमण्ड और एन्जिल ग्रुप का क्लास कराया। प्रात: 11.30 से 12.30 बजे तक 'यज्ञ इतिहास के प्रेरक प्रसंग' विषय पर **ब्र.कु. करुणा जी** ने क्लास कराया। सायं 5 से 6 बजे तक बच्चों के लिए 'प्रश्न आपके, उत्तर हमारे' इस विषय पर वर्कशॉप कराया गया जिसमें बच्चों के द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर **डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल जी, ब्र.कु. राजू जी** और **ब्र.कु. दिनेश** ने दिए। कार्यक्रम का संचालन **ब्र.कु. हेतल बहन** और **ब्र.कु. ललित** ने किया। सायं 6 से 8.30 बजे तक पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह में सभी बच्चों को पुरस्कार दिए गए। इस समारोह में **डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल** ने बच्चों को कार्यक्रम की उपलब्धियां बताते हुए शुभकामनाएं दीं। चकलासी, अहमदाबाद के **कुमार दर्शन** एवं डेरावल नगर, दिल्ली की **कु. अक्षिता** ने शिविर के अनुभव सुनाये। **ब्र.कु. मृत्युंजय जी** ने प्रासंगिक प्रवचन में बच्चों को पुरस्कार पाने के लिए बधाइयां दीं। **ब्र.कु. वेद गुल्यानी** ने भी बच्चों को शुभकामनाएं दीं। **ब्र.कु. निर्वैर जी** ने भी अध्यक्षीय प्रवचन में बच्चों को 35वें अखिल भारतीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर की सफलता पर आशीर्वचन दिए। **ब्र.कु. सुशीला बहन** ने आभार प्रदर्शन किया एवं सभी बच्चों को ब्र.कु. निर्वैर जी, ब्र.कु. मुन्नी बहन जी, ब्र.कु. मृत्युंजय जी एवं डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल के हस्तों से पुरस्कार दिए गए। इस शिविर में सबसे अधिक पुरस्कार प्राप्त करने वाले सेंटर को भी सम्मानित किया गया जिसमें प्रथम स्थान महुधा, नडियाद (गुजरात), द्वितीय स्थान भावनगर (गुजरात) और गोंदिया (महाराष्ट्र) तथा तृतीय स्थान डेरावल नगर (दिल्ली) ने प्राप्त किया।

दिनांक 26 मई, 2014 को बच्चे आबू दर्शन हेतु रवाना हुए और रात्रि को सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। सांस्कृतिक कार्यक्रम का संचालन इलाहाबाद की **ब्र.कु. सुषमा बहन** ने किया। सप्ताह के इस शिविर में बच्चों के लिए मूल्यनिष्ठ क्लास, स्पर्धाएं, खेलकूद एवं अनेक प्रकार से अपने व्यक्तित्व विकास के लिए कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

दिनांक 27 मई, 2014 को सभी बच्चों ने अपने सेवा स्थानों के लिए प्रस्थान किया।

35वां अखिल भारतीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर की झलकियाँ

विभिन्न स्थानों पर हुई शिक्षा प्रभाग की सेवाओं की झलकियां

हैदराबाद

नई दिल्ली

नई दिल्ली

गांधीनगर

नई दिल्ली

शान्तिवन

कोल्हापुर

नई दिल्ली

नासिक

शान्तिवन

जयपुर

डिवरूगढ़

शान्तिवन

चेन्नई

सिरसा

ब्र.कु. मृत्युंजय

आध्यात्मिक ज्ञान, गुणों एवं शक्तियों से विभूषित दादी प्रकाशमणि जी ऐसी सशक्त महिला का नाम है जिन्होंने महिलाओं को शक्ति स्वरूपा बनने का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया एवं उनकी छिपी हुई शक्तियों को जागृत किया। दादी जी ने विश्व के 130 देशों के लाखों भाई-बहनों को रूहानी सेवा में शामिल किया। उन्होंने अपनी अनुपम आध्यात्मिक दक्षता से समाज में जीवन मूल्यों की स्थापना की आधारशिला रखी।

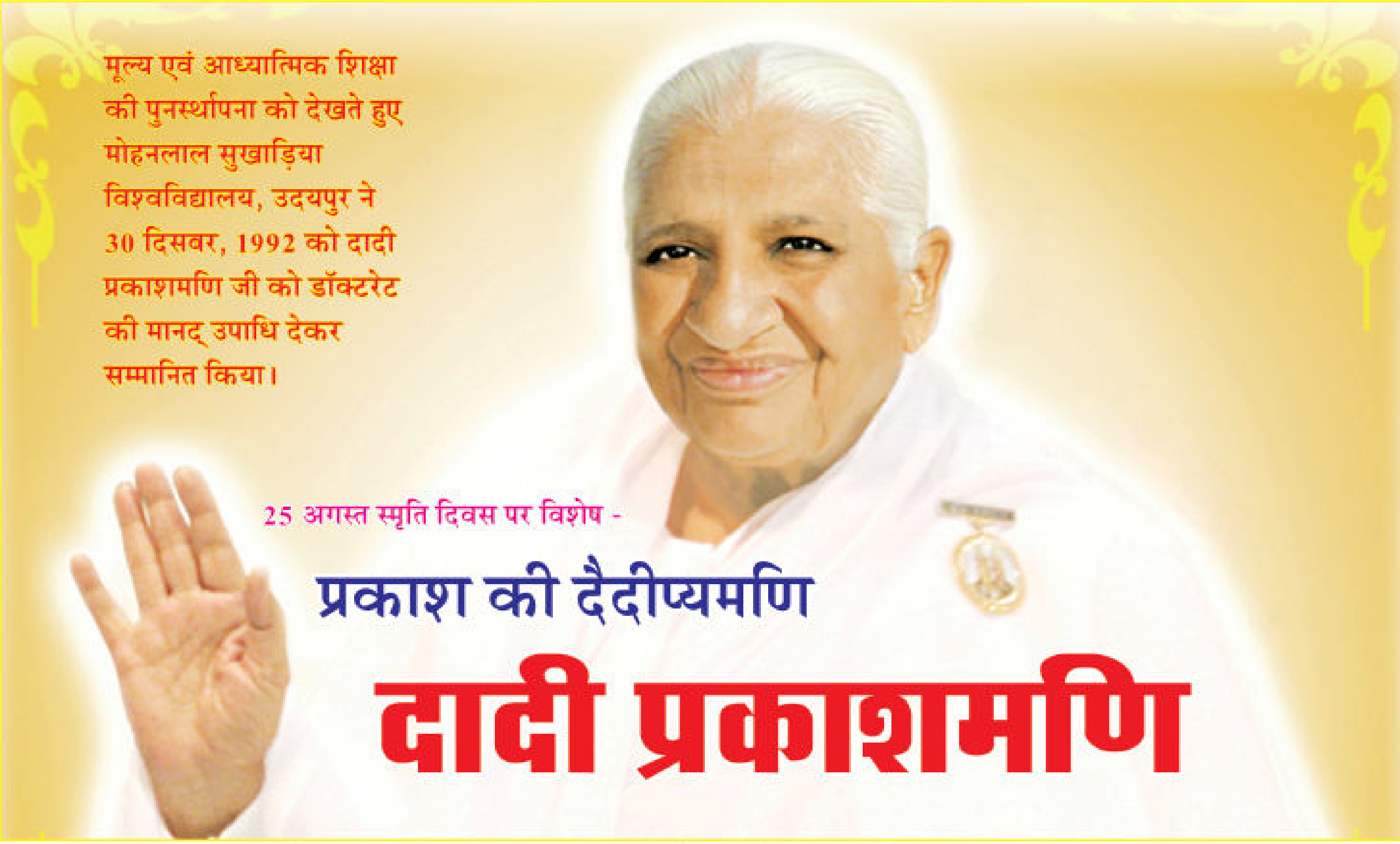

मूल्य एवं आध्यात्मिक शिक्षा की पुनर्स्थापना को देखते हुए मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर ने 30 दिसबर, 1992 को दादी प्रकाशमणि जी को डॉक्टरेट की मानद् उपाधि देकर सम्मानित किया।

25 अगस्त स्मृति दिवस पर विशेष -

प्रकाश की दैदीप्यमणि दादी प्रकाशमणि

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के विशाल आध्यात्मिक संगठन का सफल नेतृत्व करती हुईं दादी जी ने विश्व कल्याण का परचम फहराया। ऐसी महान विभूति का जन्म दीपावली के शुभ दिन पर सन् 1922 में अविभाजित भारत के सिंध प्रांत के हैदराबाद शहर में हुआ था। दादी जी बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि की थी। उनका इस संस्था में एक स्नेहमयी, लगनशील, आज्ञाकारी कुमारी के रूप में पदार्पण हुआ। उस समय इस संस्था को 'ओम मंडली' के नाम से जाना जाता था। उन्होंने 14 वर्ष की अल्पायु में ही अपना जीवन मानव कल्याण हेतु प्रभु अर्पण कर दिया। आप परमात्म शिक्षा से प्रेरित होकर अपने जीवन में पवित्रता, शांति, प्रेम, सरलता, दिव्यता, नम्रता, निरहंकारिता जैसे विशेष गुणों को अपनाकर आध्यात्मिक प्रकाश को फैलाने और मानव को महान बनाने के कार्य में सफल रहीं।

सन् 1969 में प्रजापिता ब्रह्मा ने अध्यात्म की मशाल दादी जी को सौंप दी और स्वयं सम्पूर्ण बन गए। पिताश्री जी के अव्यक्त होने के पश्चात् दादी जी ने सम्पूर्ण मानवता की सेवा करते हुए एक विशाल आध्यात्मिक संगठन को साथ लेकर विश्व सेवा का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने विभिन्न जाति, वर्ग, रंग-भेद को दूर करने के लिए मानवता में विश्व-बंधुत्व एवं वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को जगाने के लिए आत्मिक एवं प्रभु संतान की स्मृति दिलाई तथा परमात्म अवतरण के ईश्वरीय संदेश को अल्प समय में सम्पूर्ण विश्व के क्षितिज पर गुंजायमान किया।

आपके कुशल नेतृत्व के कारण संस्थान को संयुक्त राष्ट्र संघ ने गैर सरकारी संस्था के तौर पर आर्थिक एवं सामाजिक परिषद का परामर्शक सदस्य बनाया एवं यूनिसेफ ने भी अपने कार्यों में अपना सहभागी बनाया। आपके नेतृत्व में संस्था ने विश्व शांति हेतु कई रचनात्मक एवं सार्थक कार्यक्रम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किए। उनकी उपलब्धियों को देखकर संयुक्त राष्ट्र संघ ने सन् 1987 में एक अंतर्राष्ट्रीय तथा 5 राष्ट्रीय स्तर के 'शांतिदूत' पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया।

मूल्य एवं आध्यात्मिक शिक्षा की पुनर्स्थापना को देखते हुए मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर ने दादी जी को डॉक्टरेट की मानद् उपाधि देकर सम्मानित किया। कुशल प्रशासिका दादी जी के कर्तव्यों, गुणों, चरित्रों और महानताओं की झलक सर्व को अपनी ओर आकर्षित करती थी। ऐसी विशालहृदयी व्यक्तित्व की धनी थी दादी प्रकाशमणि जी, जिनके दर्शन मात्र से ही दु:ख, अशांति एवं चिंताएं दूर हो जाती थीं। आप सबके दिलों में अमर हैं। ऐसी महान विभूति दादी जी ने 25 अगस्त, 2007 को अपनी भौतिक देह का त्याग कर नई दुनिया के निर्माण हेतु अव्यक्त यात्रा को प्रस्थान किया। उन्हें सर्व ईश्वरीय परिवार एवं देश-विदेश की ओर से शत्-शत् नमन।

दादी जी का जीवन चरित्र हम सबके लिए प्रेरणादायी

ब्र.कु. किशनदत्त अनुदर्शी

दादी प्रकाशमणि जी ने सन् 1936 में 14 वर्ष की बाल्यावस्था में ही अध्यात्म की साधना में स्वयं को समर्पित कर दिया। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साकार संस्थापक और निराकार परमात्मा शिव के मानवीय माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के सन् 1969 में अव्यक्त होने के पश्चात् संस्थान के संचालन की बागडोर आपके हाथों में आई और आपने स्वयं को निमित्त समझते हुए संचालन व्यवस्था को बखूबी संभाला। अलौकिक व्यक्तित्व की धनी दादी जी 25 अगस्त, 2007 को भौतिक देह त्याग अव्यक्त वतनवासी बन गई। लगभग 71 वर्ष के साधना काल और 38 वर्ष के नेतृत्व काल में उनके चरित्र चिरस्मरणीय बन गये। उनकी नेतृत्व क्षमता की निपुणता की विशेष झलकियाँ अनेक लोगों ने अनुभव की हैं।

सेवा करने वालों का सम्मान

नेतृत्व के लिए सबसे पहली आवश्यकता मनोबल की होती है। आध्यात्मिक साधना के सतत् अभ्यास द्वारा मनोबल बढ़ाया जा सकता है। दादी प्रकाशमणि ने राजयोग की साधना द्वारा मनोबल का विकास किया और मुख्य प्रशासिका के पद का निर्वहन बड़ी सफलता से किया। उनके जीवन के एक प्रेरणादायी प्रसंग का उल्लेख करना समीचीन होगा। एक बार आध्यात्मिक मेले की ट्रांसपोर्ट की सेवा करके एक वरिष्ठ भाई (साकार बाबा के समय का ज्ञान प्राप्त किया हुआ) देर रात सेवाकेन्द्र पर लौटा। दिनभर सेवा में व्यस्त रहने के कारण उसे भूख लगी थी, उसने सेवाकेन्द्र की बहनों से भोजन के लिए अनुरोध किया। बहनों ने कहा, यह कोई भोजन का समय है। उस सेवाकेन्द्र पर कुछ समय के लिए आई हुई मुख्य प्रशासिका दादी जी को इस बात का पता चला तो उन्होंने स्वयं खाना बनाना शुरू कर दिया। अन्य बहनों को जब पता लगा तो वे तुरंत दौड़कर आईं और खाना बनाने में सहयोग देने लगीं। इस वृत्तांत का उल्लेख करने का भावार्थ यह है कि एक अच्छा उदारचित्त संचालक, कार्य करने वालों की कद्र करता है और उनकी हर आवश्यकता की पूर्ति करने में अपने आराम की भी परवाह नहीं करता।

आंतरिक कलाओं की परख

कुशल नेतृत्व क्षमता की धनी दादी जी ने अपनी परखशक्ति से सभी ब्रह्मावत्सों की अंतर्निहित कलाओं का उपयोग कर उन्हें सेवा में सहयोगी बनाया। दादी जी ने किसी की कमी या कमजोरी को अपने चित्त पर नहीं रखा। अपनी मधुर शिक्षाओं से गलत को महसूस कराकर, उनकी मान्यताओं को यथार्थ बनाकर उन्हें सेवा में साथी-सहयोगी बनाया।

सर्व को सर्व प्रकार से सहयोग देकर उन्हें मूल्यवान बना देना, सबको ऊँचा उठा देना, सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना, सर्व की कमजोरियों को अपनी कमजोरी समझना, उन्हें दूर करने की उदात्त भावना रखना – दादी जी ने ये कार्य प्रैक्टिकल रूप में करके दिखाये। उन्होंने सबको अनेक प्रकार की मदद देते हुए मूल्यवान (योग्य) बनाया। उनके नेतृत्वकाल में हजारों आत्माओं ने ईश्वरीय सेवा में अपना जीवन समर्पित किया जिनमें दादी ने अपनी उदार भावनाओं से रूहानी मातृत्व एवं स्नेह का संचार किया। उनके सान्निध्य में पुष्पित पल्लवित हुई लाखों आत्मायें आज भी उनकी अलौकिक पालना की अलौकिक गाथा कहते हुए प्रतीत हो रहे हैं। इसलिए दादी जी विश्व की दादी के रूप में प्रख्यात हुई।

स्व-सेवा और विश्व-सेवा का संतुलन

मानव जीवन के महान लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए स्व-साधना और सर्व की सेवा, इन दोनों पक्षों में सहज संतुलन होना जरूरी है। दादी जी ने जितनी लगन से राजयोग की साधना के द्वारा ईश्वरीय शक्तियों की अनुभूति की, उतनी ही आत्मीयता से वे जनकल्याण की सेवा में भी लगी रही। उन्होंने साधना को प्रथम स्थान दिया और सेवा को दूसरा। साधना पर ज़ोर देते हुए वे अक्सर कहा करती थी कि 'हमें यह जीवन मिला ही है तपस्या करने के लिए। हम तपस्या करते हुए सेवाओं को संपन्न करते चलें।' उनके उद्बोधनों से यह स्पष्ट पता चलता है कि उनके चिंतन में अध्यात्म की साधना सर्वप्रथम थी।

उनके सन्निध्य में मिलते थे समाधान

दादी जी का जीवन संपूर्ण पवित्रता और सम्पूर्ण समर्पण का अनूठा उदाहरण रहा। परमात्मा के प्रति और परमात्मा के साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के प्रति ऐसा समर्पित भाव अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलता है। उनके अंत:करण की पवित्रता के पवित्र प्रकंपन हमने स्वयं अनुभव किये। उनकी पवित्रता और शीतलता की आभा में आते ही अनेक लोगों को समाधान मिल जाते थे। सब उनसे मिलकर स्वयं को हल्का अनुभव करते थे। धन्य हैं वे आत्मायें जिन्हें उनका सान्निध्य मिला। दादी जी का जीवन चरित्र हम सबके लिए प्रेरणादायक है। सदा अव्यक्त स्थिति के अनुभव में रहने वाली ऐसी आत्मा जब फरिश्ता स्वरूप धारण करती है तो सूक्ष्म रूप से मार्गदर्शन करने की सेवा करती है। दिव्य आत्माओं का अंतिम कार्य भी दिव्य ही होता है। दादी जी की अव्यक्त प्रेरणायें आज भी हमारा मार्गदर्शन कर रही हैं। ऐसी दिव्य प्रभावान, दिव्य आलोक बिखेरने वाली दिव्य आत्मा को हम हृदय से श्रद्धा-सुमन समर्पित करते हैं।

तपस्विनी दादी प्रकाशमणि जी

गुजरात के समकालीन मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी जी दादी प्रकाशमणि जी से आशीर्वाद लेते हुए।

पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी का अभिवादन करते हुए दादी प्रकाशमणि जी।

यू.पी.ए. की अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गांधी जी का अभिवादन करते हुए दादी प्रकाशमणि जी।

प्रसिद्ध समाजसेवी मदर टेरेसा जी के साथ दादी प्रकाशमणि जी।

आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू जी को ईश्वरीय सौगात प्रदान करते हुए दादी प्रकाशमणि जी।

1922: दादी प्रकाशमणि का जन्म हैदराबाद सिंध (पाकिस्तान) में हुआ। पिताजी हैदराबाद के सुप्रसिद्ध व्यापारी एवं ज्योतिषी थे।

1937: ब्रह्माकुमारी संस्था की स्थापना का समय। इस समय दादी जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन ईश्वरीय सेवार्थ समर्पित किया।

1937-50: त्याग-तपस्या व आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा जीवन को मूल्यनिष्ठ बनाया। स्वयं सर्वशक्तिवान परमात्मा के सान्निध्य में राजयोग की गहन साधना कर आत्मिक बल अर्जित किया। साथ ही संस्था के बोर्डिंग स्कूल में बच्चों को पढ़ाने की सेवा की।

1950: संस्था का स्थानान्तरण कराची से आबू पर्वत (राजस्थान) में हुआ।

1954: ब्रह्माकुमारी संस्था का प्रतिनिधि मंडल दादी जी के नेतृत्व में 'द्वितीय विश्व धर्मसभा' में भाग लेने जापान गया। छः मास के इस प्रवास के दौरान हांगकांग, सिंगापुर, इंडोनेशिया इत्यादि देशों में जाकर वहाँ के लोगों को आध्यात्मिक ज्ञान व राजयोग मेडीटेशन का प्रशिक्षण दिया।

1956: भारत के विभिन्न राज्यों में आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार किया तथा दिल्ली, पटना, कोलकाता और मुम्बई में नये सेवाकेंद्र खोले।

1956-61: मुम्बई के ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्रों की निदेशिका बनीं। लगभग 100 से भी अधिक कॉन्फ्रेंसेस, आध्यात्मिक प्रदर्शनियां व मेले आयोजित किए।

1964: महाराष्ट्र जोन की निदेशिका बन ईश्वरीय सेवाओं में वृद्धि की।

1965-68: महाराष्ट्र, गुजरात एवं कर्नाटक ज़ोन की निदेशिका के रूप में सेवाएं दीं।

1969: संस्था की मुख्य प्रशासिका नियुक्त हुई। दीदी मनमोहिनी के साथ मिलकर मुख्य प्रशासिका के रूप में संस्था का नेतृत्व किया।

1969-84: भारत के विभिन्न राज्यों में 50 से अधिक कॉन्फ्रेंसेस का आयोजन दादी जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

1972: संस्था की सेवाओं का विदेशों में विस्तार हुआ। दादी जी छः सदस्यों के प्रतिनिधि मंडल के साथ विदेश सेवा पर गई और विभिन्न देशों में सेवाकेंद्रों की स्थापना की।

1973: दिल्ली के रामलीला मैदान में भव्य विश्व नवनिर्माण आध्यात्मिक मेले का आयोजन किया गया जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने मेले का अवलोकन किया और इससे लाभ उठाया।

1976: 'डिवीनाइज द मैन' कॉन्फ्रेंस का आयोजन मुम्बई में किया गया।

1977: विश्व के पांचों महाद्वीपों में 'पवित्रता के द्वारा विश्व शांति की आशा' कार्यक्रम द्वारा विश्व के राजनीतिज्ञों, धर्म नेताओं तथा अनेक संस्था के प्रमुखों को परमात्म संदेश प्रदान किया गया।

1978: 'वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस ऑन फ्यूचर मेनकाइंड' का आयोजन दिल्ली में हुआ जिसका उद्घाटन भारत के उपराष्ट्रपति बी.डी. जत्ती ने किया।

1980: 'वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस ऑन ह्यूमन सरवाइवल' का आयोजन बैंगलोर विधानसभा के बेन्केट हॉल में किया गया।

1981: संस्था को संयुक्त राष्ट्र संघ में गैर सरकारी संस्था के रूप में शामिल किया गया। इसी वर्ष 'द ओरिजन ऑफ पीस' कॉन्फ्रेंस का आयोजन नैरोबी में किया गया।

1982: संस्था की भंगिनी संस्था के रूप में 'राजयोगा एज्युकेशन एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन' की स्थापना की गई।

1983: प्रथम 'यूनिवर्सल पीस कॉन्फ्रेंस' का आयोजन आबू पर्वत में किया गया जिसका उद्घाटन धर्मगुरू दलाई लामा ने किया।

1984: अमेरिका, ब्रिटेन और यूरोप सहित 13 देशों में दादी जी ने दौरा किया और अनेक अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंसेस को सम्बोधित किया। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा पीस मेडल से संस्था को सम्मानित किया गया। द्वितीय 'यूनिवर्सल पीस कॉन्फ्रेंस' उद्घाटन गुजरात के तत्कालीन राज्यपाल आर.के. त्रिवेदी ने किया।

1985: तृतीय 'यूनिवर्सल पीस कॉन्फ्रेंस' का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन राजस्थान के राज्यपाल ओ.पी. मेहरा ने किया। संयुक्त राष्ट्र द्वारा इस वर्ष को 'ईयर ऑफ यूथ' घोषित करने पर संस्था द्वारा 'भारत यूनिटी यूथ फेस्टिवल तथा युवा पदयात्रा' का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन भारत के राष्ट्रपति महामहिम ज्ञानी जैल सिंह द्वारा किया गया।

के नेतृत्व में संस्था का दिव्य सफर

1986: संस्था का गोल्डन जुबली वर्ष मनाया गया। चौथे 'यूनिवर्सल पीस कॉन्फ्रेंस' का आयोजन किया गया। 88 देशों में 'मिलियन मिनट्स ऑफ पीस' कार्यक्रम की लॉचिंग की गई।

1987: संस्था को संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 'पीस मैसेंजर अवार्ड' प्रदान किया गया। संयुक्त राष्ट्र के सेक्रेटरी जनरल ने दादी जी को अवार्ड भेंट किया। प्रथम 'इंटरनेशनल होलिस्टिक हेल्थ कॉन्फ्रेंस' का आयोजन आबू पर्वत में किया गया।

1988: 'ग्लोबल कोऑपरेशन फॉर ए बेटर वर्ल्ड' नामक 2 साल के अन्तर्राष्ट्रीय प्रोजेक्ट की लॉचिंग की गई जिसके अन्तर्गत 122 देशों में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। 'ऑल इंडिया स्प्रिच्युल कॉन्फ्रेंस' का आयोजन आबू पर्वत में किया गया जिसका उद्घाटन बद्रिकाश्रम के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी शांतानंद सरस्वती ने किया।

1989: अन्तर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस 'ग्लोबल कोऑपरेशन फॉर ए बेटर वर्ल्ड' का आयोजन आबू पर्वत में किया गया जिसका उद्घाटन उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति सी. राय ने किया। 'ऑल इंडिया मोरल अवेकनिंग यूथ कैम्पेन' का आयोजन दिल्ली में किया गया जिसका उद्घाटन उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति रंगनाथ मिश्रा ने किया।

1990: द्वितीय 'ग्लोबल कोऑपरेशन फॉर ए बेटर वर्ल्ड' नामक अन्तर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी द्वारा किया गया। तृतीय 'इंटरनेशनल होलिस्टिक हेल्थ कॉन्फ्रेंस' का आयोजन बेलगाम में किया गया। 'ऑल इंडिया एन्वायरमेंट अवेयरनेस कैम्पेन' का आयोजन किया गया।

1991: लंदन में संस्था के ग्लोबल कॉर्पोरेशन हाउस तथा आबू पर्वत में ग्लोबल हॉस्पिटल का उद्घाटन किया गया। दादी जी यूरोप व दक्षिण-पूर्व एशिया के दौरे पर गईं जहाँ उन्होंने अनेक कार्यक्रमों को सम्बोधित किया।

1992: दादी जी रशिया के दौरे पर गई। दादी जी को मुम्बई के प्रियदर्शनी एकेडमी द्वारा प्रियदर्शनी अवार्ड से सम्मानित किया गया। मोहनलाल सुखाड़िया वि.वि., उदयपुर द्वारा दादी जी को डाक्टरेट की उपाधि से नवाजा गया। येल्लापुर में हाईस्कूल की टीचर्स के लिए टीचर ट्रेनिंग सेंटर का उद्घाटन किया गया।

1993: 'इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन यूनिवर्सल हार्मनी' का आयोजन आबू पर्वत में किया गया जिसका उद्घाटन भारत के प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हराव ने किया। युवा सद्भावना सायकल यात्रा का आयोजन भारत के 8 स्थानों से किया गया।

1994: स्वास्थ्य मेलों का आयोजन पूरे भारत में किया गया।

1996: इंडो-नेपाल हेल्थ अवेयरनेस कैम्पेन का आयोजन किया गया।

1999: दिल्ली से जमशेदपुर व दिल्ली से हैदराबाद तक नशामुक्ति अभियान निकाले गए।

1999-2000: भारत के 24 मुख्य शहरों से 24 ज्योतिर्लिंगम रथयात्राएं निकाली गईं। सभी रथयात्राओं का अंतिम पड़ाव आबू पर्वत था। इसका भव्य समापन आबू पर्वत में किया गया।

2000: 'इंटरनेशनल ईयर फॉर द कल्चर ऑफ पीस - मेनिफेस्टो 2000' कार्यक्रम के अन्तर्गत पूरे भारत से 3 करोड़ लोगों से फार्म भरवाए गए। तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी तथा मानव संसाधन मंत्री मुरली मनोहर जोशी ने भी अपने फार्म भरकर इस अभियान में योगदान दिया।

2001-03: पूरे भारत में विश्व बंधुत्व व सद्भावना की भावना को लेकर मेगा प्रोग्राम आयोजित किए गए।

2004: युवा एवं खेल मंत्रालय के सहयोग से संस्था के युवा प्रभाग ने भारत की सात राजधानियों में युवा महोत्सव आयोजित किए।

2005-06: 'लीविंग स्प्रिच्युअलिटी फॉर ए वैल्यू बेस्ड सोसायटी' अभियान के अन्तर्गत पूरे भारत में कार्यक्रम आयोजित किए गए।

2006-07: 'शांति एवं शुभभावना' अभियान चलाया गया। 'वर्ल्ड पीस फेस्टिवल' का आयोजन दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में 27 अक्टूबर से 5 नवम्बर, 2006 तक किया गया।

2007-08: 'दिव्यता, आशा एवं खुशी' कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत के हर शहर में कार्यक्रम आयोजित किए गए। भारत के जगद्गुरु, महामण्डलेश्वरों तथा संतजनों के लिए 'आध्यात्मिक कार्यक्रम' का आयोजन किया गया। पर्यावरण संकट पर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

पूर्व राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल जी को आशीर्वाद देते हुए दादी प्रकाशमणि जी।

दादी प्रकाशमणि जी को डॉक्टरेट की डिग्री प्रदान करते हुए राजस्थान के राज्यपाल डॉ. एम. चन्नारेड्डी।

पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी जी के साथ दादी प्रकाशमणि जी।

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के साथ ईश्वरीय ज्ञान चर्चा करते हुए दादी प्रकाशमणि जी।

सिरोही के राजा एम.एम. रघुवीर सिंह जी के साथ दादी प्रकाशमणि जी।

विशेष लेख

आंतरिक सशक्तिकरण की प्रक्रिया है मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा

ब्र.कु. हरीन्द्र, वाराणसी

शिक्षा सूक्ष्म स्तर पर संचालित होने वाली एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। यद्यपि बाह्य रूप से यह सर्व विदित तथ्य है कि इसमें तीन तत्व बालक, शिक्षक और पाठ्यक्रम सम्मिलित होते हैं। वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में अत्यन्त प्रगति हुई है। वैज्ञानिक अविष्कारों और संचार के आधुनिक साधनों का प्रयोग विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने के लिए सहायक सामग्री के रूप में प्रयोग होने लगा है। कक्षा में 'चाक' और 'डस्टर' का प्रयोग अब पुराने जमाने की बात हो गई है। अब 'स्मार्ट क्लास' या 'डिजिटल क्लास' आधुनिक शिक्षा के नये अवतार के रूप में हमारे सामने आने लगे हैं। शिक्षा का क्षेत्र वर्तमान समय में एक बहुत बड़ा व्यावसायिक निवेश का क्षेत्र भी बन गया है। कुल मिलाकर शिक्षा के क्षेत्र में भौतिक संसाधनों का पहले की अपेक्षा अधिक व्यापक स्तर पर प्रयोग हो रहा है। अब विशेष रूप से अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों तथा सरकारी विद्यालयों में भी बेहतर भवन की सुविधा उपलब्ध है। आज तो प्राथमिक और जूनियर स्तर पर संचालित होने वाले विद्यालयों में पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों के लिए मुफ्त पुस्तकें, ड्रेस और खान-पान की सुविधा उपलब्ध है। परन्तु यह बात सर्वमान्य स्तर पर स्वीकार की जाती है कि शिक्षा का स्तर निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होने के बजाय अवनति की ओर अग्रसर होता जा रहा है।

शिक्षा के गिरते स्तर से शिक्षाविद्, सरकारी संस्थायें, शिक्षक, विद्यार्थी, अभिभावक इत्यादि सभी चिन्तित और प्रभावित हैं। वास्तव में, वर्तमान समय में शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों पर आने वाले कल के समाज के उत्तरदायित्व निर्वहन की भारी जिम्मेदारी है। बच्चे राष्ट्र के सुनहले भविष्य होते हैं परन्तु वर्तमान शिक्षा पद्धति उनके सुनहले भविष्य का निर्माण करने में असमर्थ है। विद्यार्थियों के नैतिक स्तर, सोच और कर्म-व्यवहार की गुणवत्ता में निरन्तर गिरावट जारी है। आज विद्यार्थियों में निराशा और कुण्ठा का भाव अधिक मात्रा में दिखाई देता है। वे स्वयं अपने जीवन और भविष्य के प्रति आश्वस्त नहीं दिखाई देते हैं। यही निराशा का भाव उनके जीवन में भटकाव का कारण बन जाता है। इसके परिणामस्वरूप वे कभी अनेक गलत रास्तों का चयन और मादक द्रव्यों के सेवन के दुष्चक्र में फंस जाते हैं। विद्यालय के वातावरण, शिक्षकों के व्यक्तित्व तथा माता-पिता के आचरण से उन्हें कोई विशेष प्रेरक शक्ति प्राप्त होती दिखाई नहीं देती है जो उनके जीवन को सकारात्मक दिशा प्रदान कर सके। शिक्षा केवल रोजी और रोटी की समस्या के समाधान तक केन्द्रित होकर सिमट गई है और आधुनिक शिक्षा की प्रमुख विडम्बना यह है कि उच्च व्यावसायिक शैक्षिक डिग्री भी विद्यार्थियों को उनके सुरक्षित आर्थिक भविष्य अर्थात् रोजी-रोटी की समस्या के समाधान की गारण्टी नहीं दे पाती है। जीवन में भौतिकता को अत्यधिक महत्व देने का प्रभाव शिक्षा पर पड़ा है। वर्तमान समय में उच्च शैक्षिक ज्ञान किसी विद्यार्थी के व्यक्तित्व के विकास का मानक नहीं समझा जाता है बल्कि 'हाई सैलरी का पैकेज' किसी भी विद्यार्थी के सफलता का मानक माने जाने लगा है। समाज और अभिभावकों का यह भौतिकवादी दृष्टिकोण भी विद्यार्थियों में मूल्यों के ह्रास का एक प्रमुख कारण है। दूसरी बात, विद्यालयों में विद्यार्थियों के नैतिक विकास के लिए नैतिक शिक्षा की अधिकांश कक्षायें खाली रहती हैं। दूरदर्शन, इंटरनेट तथा सोशल मीडिया के कारण विद्यार्थियों का मानस पटल भौतिक जगत् की आकर्षक बुराइयों से अत्यधिक प्रभावित हुआ है। इससे विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों के प्रति सोच में व्यापक बदलाव आया है। उनकी दृष्टि में एक नैतिक चरित्रवान विद्यार्थी की अपेक्षा रटकर तथा किसी भी प्रकार से उच्च अंक प्राप्त कर लेना एक सफल विद्यार्थी की पहचान है। परन्तु इसका भयंकर नुकसान समाज को उठाना पड़ रहा है। आज समाज में जो भ्रष्टाचार, अनाचार, अत्याचार और दुराचार इत्यादि दिखाई दे रहा है वह व्यक्तित्व में मानवीय मूल्यों के ह्रास के कारण उत्पन्न नकारात्मक सोच का उत्पाद है।

बालक में जन्मजात रूप से असीम मानसिक शक्तियां अन्तर्निहित होती हैं। शिक्षा, शिक्षक और अभिभावक का यह कर्तव्य है कि वह बालक को उसकी आन्तरिक शक्तियों की आत्म-अनुभूति कराकर व्यक्तित्व के विकास में बालक की सहायता करें। परन्तु वर्तमान समय में बालकों को शरीर मानकर शिक्षा दी जाती है। यही शिक्षा प्रणाली की सबसे कमजोर और महत्वपूर्ण कड़ी है जिसको समझने की आवश्यकता है। क्योंकि जब विद्यार्थी स्वयं को शरीर समझता है तो उसे अपनी अन्तर्निहित मानसिक शक्तियों का अनुभव नहीं हो पाता है। इस सन्दर्भ में दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि विद्यार्थियों को इन जन्मजात मानसिक शक्तियों के सकारात्मक दिशा के विकास के सम्बन्ध में कोई ज्ञान नहीं दिया जाता है। इसके कारण विद्यार्थी अपनी मानसिक शक्तियों पर नियन्त्रण नहीं रख पाता है तथा उसमें अनेक प्रकार की मनोवैज्ञानिक विकृतियां और समस्यायें उत्पन्न हो जाती हैं। इससे उसके व्यक्तित्व का ठीक प्रकार से विकास नहीं हो पाता है। वह अपने अंदर विद्यमान संकल्पों की महान शक्ति से अनजान होता है।

शिक्षा जगत् की इस मौलिक त्रुटिपूर्ण अवधारणा को दूर करने के सम्बन्ध में राजयोग शोध एवं शिक्षा संस्थान के शिक्षा प्रभाग द्वारा विगत कई दशकों से शोधकार्य करके 'मूल्य एवं आध्यात्मिक शिक्षा' की एक नई संकल्पना को प्रस्तुत किया गया है। मूल्य एवं आध्यात्मिक शिक्षा किसी भी व्यक्ति को उसके वास्तविक सत्य स्वरूप का यथार्थ परिचय कराकर मानसिक शक्तियों की अनुभूति कराती है। मूल्य एवं आध्यात्मिक शिक्षा के क्षेत्र में अभी अनेक प्रकार के प्रयोग जारी है और इसके बहुत ही सकारात्मक परिणाम सामने आये हैं। मूल्य एवं आध्यात्मिक शिक्षा विद्यार्थियों में चिन्तन प्रक्रिया का वैज्ञानिक ढंग से विकास करके आन्तरिक शक्तियों को सकारात्मक दिशा प्रदान करती है। इससे विद्यार्थियों का आन्तरिक सशक्तिकरण होता है। इसके कारण विद्यार्थियों को यह प्रत्यक्ष ज्ञान होता है कि शान्ति, प्रेम, आनन्द और ज्ञान इत्यादि बाह्य जगत् के किसी भी स्रोत से प्राप्त नहीं होता है। हमारे इस भौतिक शरीर का आधार लेकर कर्म कराने वाली चैतन्य शक्ति आत्मा ही शान्ति, प्रेम, आनन्द इत्यादि गुणों का स्रोत है। ध्यानाभ्यास द्वारा स्वयं के इस वास्तविक स्वरूप का अनुभव करने से उपर्युक्त गुणों का जीवन में स्वाभाविक रूप से विकास होता है। इस प्रकार जीवन में उत्पन्न होने वाले सभी प्रकार के भटकाव, लगाव और झुकाव समाप्त हो जाते हैं। जीवन में आन्तरिक और बाह्य जगत् की शक्तियों में सन्तुलन और समन्वय स्थापित हो जाता है। व्यक्तित्व का सशक्तिकरण हो जाता है। सकारात्मक चिन्तन का विकास होने से श्रेष्ठ कर्म करने की कला का विकास हो जाता है। जीवन में सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की संकल्पना साकार हो जाती है।

VALUE EDUCATION AND SPIRITUALITY

Admission Open, 2014-15

Brahma Kumaris Education Wing, RE & RF offers through Collaboration

Annamalai University, Annamalai Nagar, Tamil Nadu

(Jurisdiction: India & Nepal) in 10 languages

Course

1. MBA in "Self Management and Crisis Management"
2. M.Sc. in "Value Education and Spirituality"
3. PG Diploma in "Value Education and Spirituality"
4. PG Diploma in "Values in Health Care"
5. Diploma in "Value Education and Spirituality"

Address

B.K. Jayakumar, Co-ordinator
AU NODAL CENTRE
Brahma Kumaris, Vishwa Shanti Bhawan
Meenakshi Nagar, Behind P& T Nagar
Madurai - 625017 (TN)
Ph.: 0452 - 2640777, Fax : 0452 2640666
Mob.: +91 94422 68660, E-mail: bkeducationwing@gmail

Yashwantrao Chavan Maharashtra Open University, Nashik, Maharashtra

Jurisdiction: Maharashtra (Languages- Hindi, English & Marathi)

Course

1. Bachelor's Degree (B.A.) in "Values and Spiritual Education"
2. Advanced Diploma in "Values and Spiritual Education"
3. Diploma in "Values and Spiritual Education"

Address

B.K. Vasanti, Co-ordinator, **YCMOU NODAL CENTRE**
Brahma Kumaris, Prabhu Prasad
Kala Nagar, Behind Akash Petrol Pump
Dindori Road, Mhasrul, **Nashik - 422004 (MH)**
Ph.: 0253 - 2629557, Mob.: +91 91582 17842
Email: bkeducationwingnashik@gmail.com

Vardhman Mahaveer Open University, Kota, Rajasthan

Jurisdiction: Rajasthan (Languages- Hindi, English)

Course

1. PG Diploma in "Value Education and Spirituality"
2. Certificate Course in "Value Education and Spirituality"

Address

B.K. Mukesh, Co-ordinator
VMOU NODAL CENTRE
Brahma Kumaris, Rajyoga Bhawan
Amrapali Marg, Vaishali Nagar, **Jaipur - 302021 (RAJ)**
Ph.: 0141-2354557, Mob.: +91 9214044474
Email: bkeducationwingraj@gmail.com

Dibrugarh University, Dibrugarh, Assam

Jurisdiction: Assam (Languages- Hindi, English)

Course

1. MBA in "Self Management and Crisis Management"
2. M.Sc. in "Value Education and Spirituality"
3. PG Diploma in "Value Education and Spirituality"

Address

B.K. Binita, Co-ordinator, **DU NODAL CENTRE**
Brahma Kumaris, Vishwa Shanti Bhawan
Kumarian Siga, Raja Bheta, PB No. 139, Mohanghar
Dibrugarh - 768 008 (Assam)
Ph: 0373 - 2321399, Mob: +91 94351 30798
E-mail: dibrugarh@gmail.com

Ram Krishna Dharmarth Foundation University (RKDF), Bhopal, Madhya Pradesh

Jurisdiction: University Campus (Languages- Hindi, English)

Course

1. MBA in "Self Management and Crisis Management"
2. M.Sc. in "Value Education and Spirituality"
3. PG Diploma in "Value Education and Spirituality"
4. 100 Marks Compulsory Paper on "Values, Spirituality and Consciousness Development" in all UG, PG and Technical Courses

Address

B.K. Kiran, Co-ordinator, **RKDFU NODAL CENTRE**
Brahma Kumaris, 81, Golden Valley
Behind Sagar Complex, Kolar Road,
Bhopal - 462042 (MP)
Ph.: 0755 4251591, Mob.: + 91 94253 03630
E-mail: bkkiran@gmail.com

University of the West Indies, Trinidad & Tobago

Jurisdiction: Trinidad & Tobago

Ganpat University, Mehsana, Gujarat

Jurisdiction: University Campus (Language- English)

Sri Ramaswamy Naidu, Memorial College, (Autonomous), Sattur, Tamil Nadu

Jurisdiction: Memorial College, Sattur, Tamil Nadu

1. अखिल भारतीय उच्च माध्यमिक शिक्षकों के महासम्मेलन का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए दादी रतनमोहिनी जी, डॉ. साधु सिंग रंधावा, डॉ. एस.एन. सुब्बा राव, राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय, राजयोगी डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल तथा अन्य। 2. 35वाँ अखिल भारतीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए डॉ. साधु सिंग रंधावा, राजयोगी ब्र.कु. करुणा, राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय, राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी बहन, राजयोगी ब्र.कु. भूपाल, राजयोगी डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल तथा अन्य। 3. डॉ. दादी प्रकाशमणि जी की पुण्य स्मृति में शिक्षा विभूषण अवार्ड से श्री अनिल भाई पटेल को सम्मानित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी एवं राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय। 4. प्रो. डॉ. ई.टी. पुटैय्या को शिक्षा विभूषण अवार्ड से सम्मानित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी एवं राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय। 5. डॉ. के.वी. कुप्पूस्वामी को सम्मानित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी एवं राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय। 6. विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के शिक्षकों के महासम्मेलन में 'वैल्यूज़ इन हैल्थ केयर' का शुभारंभ करते हुए राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी, श्री अनिल भाई पटेल, राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय, राजयोगी डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल तथा अन्य ।

Education Wing HQs. Office
B.K. Mruthyunjaya, Vice-Chairperson, Education Wing
Brahma kumaris, Value Education Centre
Anand Bhawan, 3rd Floor, Shantivan, **Abu Road-307510 (Raj.)**
E-mail: educationwing@bkivv.org
Education Wing, National Co-ordinators Office
B.K. Dr. Harish Shukla, National Coordinator, Education Wing
Sukh Shanti Bhawan, Kankaria, **Ahmedabad-380022 (Guj.)**
Mob. No. : +91 9427638887 **Fax :** 079-25325150
E-mail: harishshukla31@gmail.com

To,